पाठ 7

मौर्य

आप आजकल के प्रचलित सिक्कों को ध्यान से देखिए। इसके एक ओर पीठ से पीठ सटाए हुए चार सिंह बैठे हैं। ये सिंह अशोक के सारनाथ स्तम्भ से लिए गए हैं। अशोक जिस वंश का शासक था वह वंश था- मौर्य वंश।

सिकन्दर ने 326 ई0पू0 में पश्चिमोत्तर भारत में आक्रमण किया। इस समय यहाँ नन्दवंश के शासक घननन्द का शासन था। वह बहुत ही क्रूर शासक था। चन्द्रगुप्त नामक व्यक्ति उसकी सेना में नौकरी करता था। चन्द्रगुप्त ने राजा के दुर्व्यवहार से ऊबकर राजा के खिलाफ विद्रोह कर दिया। इस विद्रोह के कारण उसे मृत्युदण्ड दिया गया लेकिन चन्द्रगुप्त इससे बचकर मगध से भाग निकला। उसने नन्दवंश के विनाश के लिए मन में ठान लिया।

चन्द्रगुप्त और चाणक्य

इसी समय चन्द्रगुप्त की भेंट चाणक्य (कौटिल्य) से हुई जिसकी मदद से चन्द्रगुप्त ने मगध पर आक्रमण कर दिया तथा नन्द राजवंश का तख्ता पलटकर 322 ई0पू0 में मौर्य साम्राज्य की स्थापना की।

यूनानी सेनापति सेल्यूकस ने 305 ई0पू0 में पश्चिमोत्तर भारत पर आक्रमण किया जिसे चन्द्रगुप्त ने परास्त कर दिया। सेल्यूकस को चन्द्रगुप्त से एक संधि करनी पड़ी जिससे चन्द्रगुप्त को हिन्दुकुश पर्वत तक के प्रान्त उपहार में मिले। सेल्यूकस ने मेगस्थनीज नामक राजदूत चन्द्रगुप्त के दरबार में भेजा। इस प्रकार चन्द्रगुप्त ने भारत में प्रथम बार एक केन्द्रीय शासन के अन्तर्गत विशाल साम्राज्य स्थापित कर लिया।

मौर्य प्रशासन

मेगस्थनीज की इण्डिका और कौटिल्य के अर्थशास्त्र पुस्तकों से मौर्यों के विशाल प्रशासन तंत्र की जानकारी मिलती है। चन्द्रगुप्त सारे अधिकार अपने ही हाथों में रखे हुए था। राजा की सहायता के लिए एक मंत्रिपरिषद गठित थी। बुद्धिमान लोग इसके सदस्य थे जो राजा को सलाह देते थे।

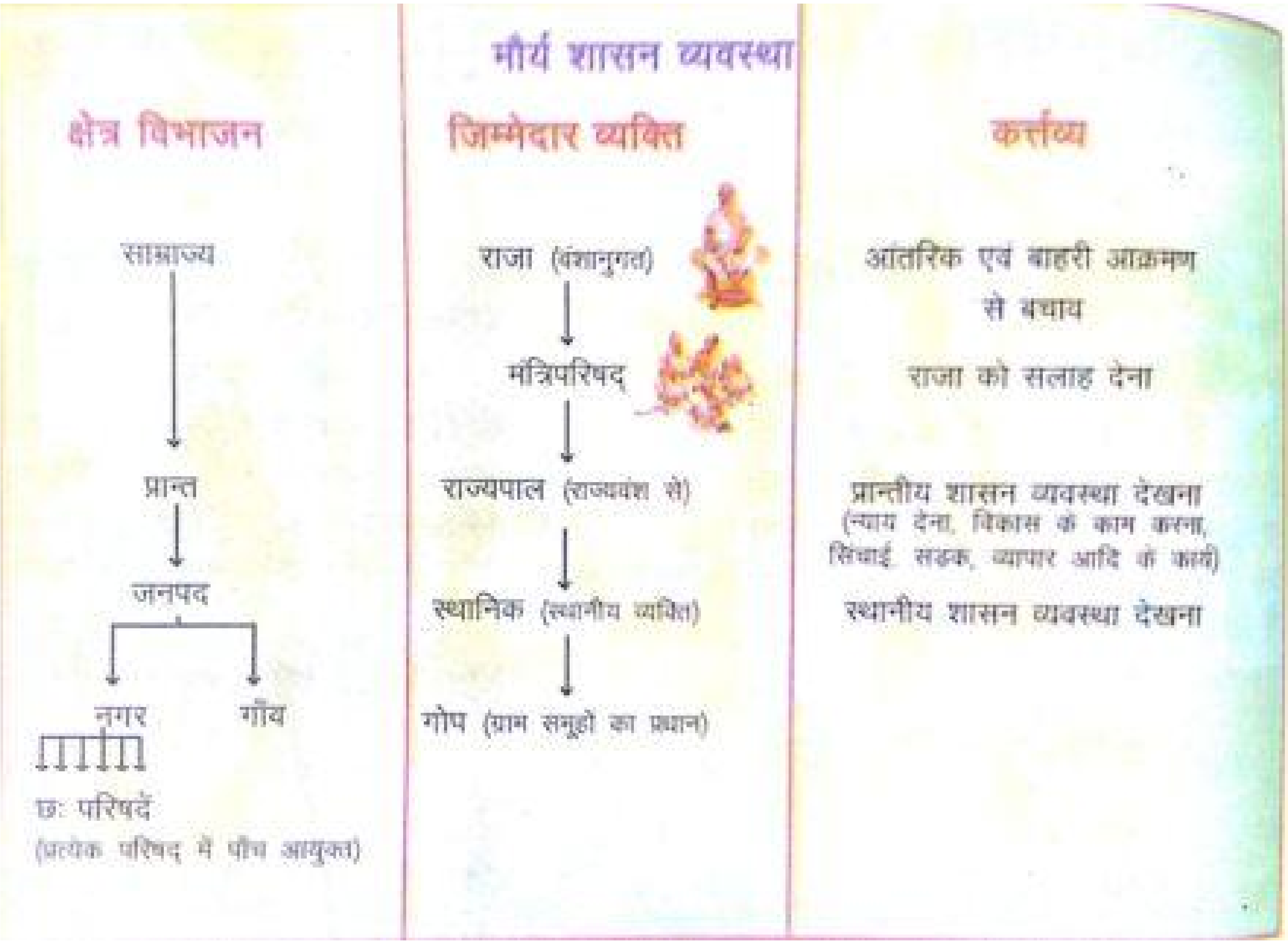

इतने बड़े साम्राज्य के अच्छे प्रशासन के लिए तीन स्तरों की शासन व्यवस्था थी - प्रान्त, जनपद और नगर/गाँव।

1.इस समय नौकरशाही व्यवस्था थी। वेतन राजकोष से दिया जाता था।

2.प्रान्त से लेकर गाँव तक की वस्तुस्थिति को राजा समय-समय पर दौरा करके स्वयं भी देखता था।

3.गुप्तचर पूरे साम्राज्य की सूचना राजा को देते थे।

4.बाहरी आक्रमण व आन्तरिक विद्रोह को दबाने के लिए थल (पैदल, हाथी, घोड़े) व जल की एक विशाल सेना राजा के पास थी।

5.इतनी बड़ी व्यवस्था चलाने के लिए धन की आवश्यकता थी जिसके लिए राजा की नीति खजाने को हमेशा भरा रखने की थी। इस समय राजस्व व्यवस्था बहुत ही थी।

6.कृषिकर, सिंचाईकर, व्यवसायी संगठनों पर बिक्रीकर आय के मुख्य स्रोत थे। इन करों को बड़ी सावधानी से इकट्ठा किया जाता था। इन करों का लेखा-जोखा रखा जाता था।

7.राज्य में आने वाले जंगलों एवं खानों पर राजा का स्वामित्व होता था। राज्य अपनी सेना के लिए हथियारों का निर्माण करता था।

8.लगभग 2500 वर्ष पहले के शासन का ढाँचा, आज भी हमारे देश के शासन के ढाँचे से मिलता है।

उपयु्र्क्त बिन्दुओं के आधार पर बताओ कि हमारे आज के शासन व मगध के शासन में क्या-क्या समानताएँ व भिन्नताएँ है?

बूझो तो जानें

मेगस्थनीज ने अपनी भारत यात्रा विवरण में उन चीजों के बारे में जिक्र किया है जो उसे आश्चर्यजनक लगी थीं। क्या आप बता सकते हैं कि उसने किनके बारे में लिखा होगा ?

1.इसकी जड़ें तनों से उगती हैं। इसकी छाया में 400 लोग एक साथ रह सकते हैं।

2.बिना मधुमक्खी के शहद निकलता है।

3.ऊन पेड़ों से उगती है।

4.पक्षी जो मनुष्य जैसे बोलते हैं।

मेगस्थनीज की नजर में -

लोग सभ्य थे। वे अपने घरों में ताला नहीं लगाते थे।

वे अपनी कही बातों का पालन करते थे।

वे झूठी गवाही नहीं देते थे।

उनके महल सोने-चाँदी से बने थे।

मगध साम्राज्य की राजधानी पाटलिपुत्र का क्षेत्रफल 9 मील लम्बा डेढ़ मील चौड़ा था।

तक्षशिला से पाटलिपुत्र तक की सड़कों के दोनों ओर छायादार वृक्ष तथा जगह-जगह पर कुएँ थे।

चन्द्रगुप्त के बाद, उनका बेटा बिन्दुसार, मगध की गद्दी पर बैठा। उनकी मृत्यु के बाद उनका बेटा अशोक मगध की गद्दी पर बैठा। अशोक युद्धप्रिय था। उसने कई राज्यों को जीतकर अपने राज्य में मिला लिया। अब कलिंग (वर्तमान में उड़ीसा राज्य में) पर विजय करना शेष था।

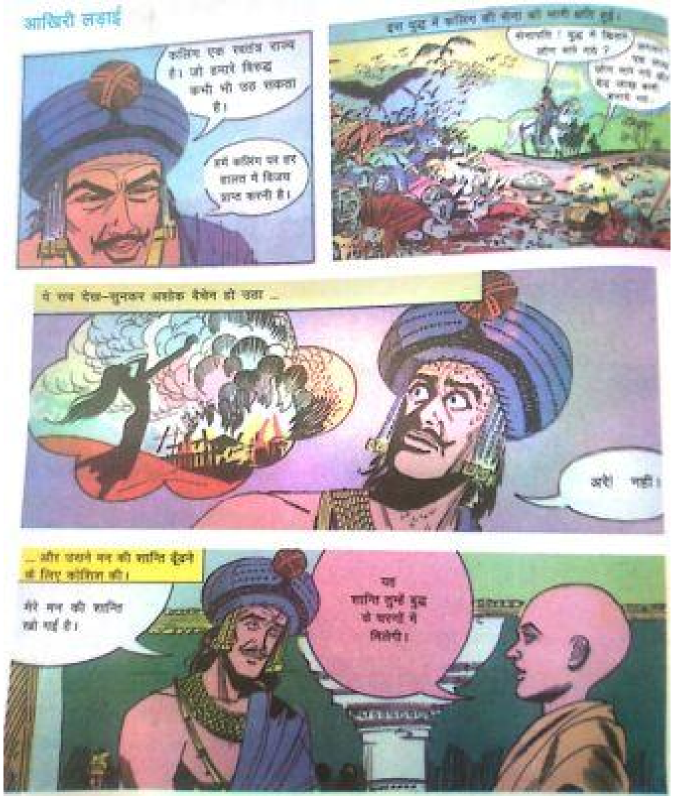

अशोक ने ऐसा फैसला किया जो आमतौर पर कोई राजा नहीं करता। उसने कलिंग को युद्ध में हराने के बाद तय किया कि वह भविष्य में कोई युद्ध नहीं लड़ेगा।

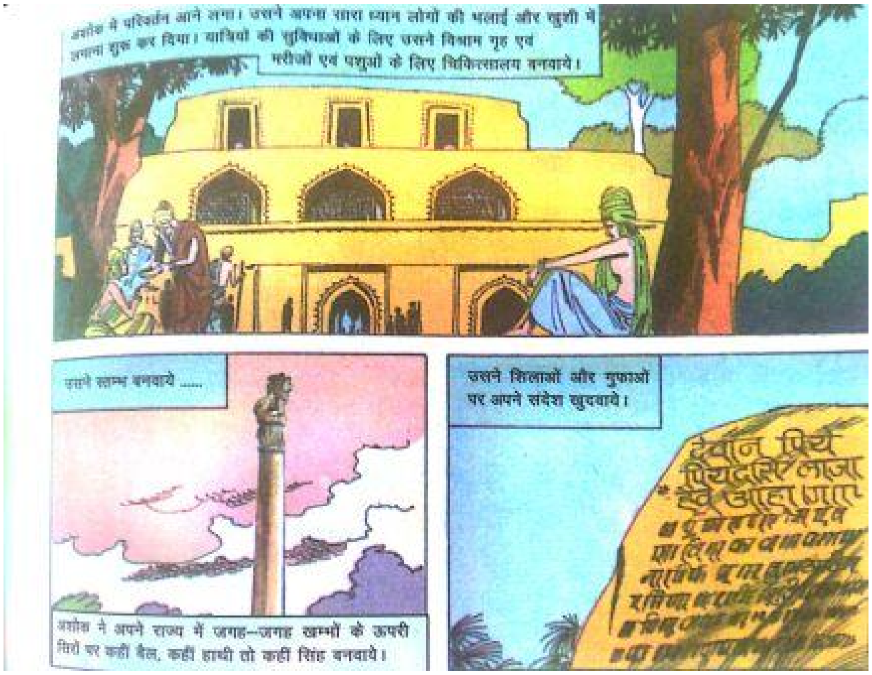

अशोक का धम्म (धर्म को पाली भाषा में धम्म कहते हैं।)

अशोक स्वयं राज्य में दूर-दूर की जगहों का दौरा करता था। अशोक ने अपने राज्य में जगह-जगह चट्टानों पर लम्बे, सुन्दर, चमकाए हुए पत्थरों से बने खम्भे गड़वाए। इन खम्भों पर वहाँ के अधिकारियों व लोगों के लिए अपने संदेश भी खुदवाए ताकि लोग उसकी बातों पर ध्यान दे सकें। उसने यह संदेश लोगों की बोलचाल की भाषा यानि प्राकृत भाषा में लिखवाए। चट्टानों व खम्भों पर खुदे उसके संदेशों से हम अशोक के समय की कई बातें जान सकते हैं।

"हर किस्म के लोगों पर युद्ध का बुरा प्रभाव पड़ता है। इससे मैं बहुत दुःखी हूँ। इस युद्ध के बाद मैंने मन लगाकर धर्म का पालन किया है और दूसरों को यही सिखाया है।"

"मैं मानता हूँ कि धर्म से जीतना युद्ध से जीतने से बेहतर है। मैं यह बातें खुदवा रहा हूँ ताकि मेरे पुत्र और पौत्र भी युद्ध करने की बात न सोचें और धर्म फैलाने की बात सोचें।"

उसने जीवन के बारे में प्रजा को सही राह दिखाने के लिए अलग से अधिकारी रखे जिन्हें धम्म महामात्र कहा गया। उनका काम था कि वे गाँव-गाँव, नगर-नगर जाकर लोगों को सही व्यवहार की बातें बताएं।

आइये अशोक का संदेश पढ़ें:

"यहाँ किसी जीव को मारा नहीं जायेगा और उसकी बलि नहीं चढ़ाई जाएगी।"

"लोग तरह-तरह के अवसरों पर तरह-तरह के संस्कार करते हैं।"

"ऐसे धार्मिक संस्कारों को करना तो चाहिए पर इनसे मिलने वाला लाभ कम ही है। कुछ संस्कार ऐसे होते हैं जिनसे ज्यादा फल मिलता है। वे क्या हैं ? वे हैं, दास

और मजदूरों से नम्रता का व्यवहार करना, बड़ों का आदर करना, जीव-जन्तुओं पर दया करना, गरीबों को दान देना आदि।"

साँची स्तूप

> आपको यह भी जानना चाहिए -
>
> अशोक प्राचीन भारत का एक महान शासक है। अशोक को इसलिए महान नहीं कहा जाता है कि उसने प्राचीन भारत के सबसे बड़े साम्राज्य पर शासन किया था बल्कि विश्व को शांति, अहिंसा का संदेश देने एवं उसकी जनकल्याण की भावना के कारण महान कहा गया है।

अशोक की बातें आज भी कहाँ तक सार्थक हैं। चर्चा कीजिए।

अशोक ने अपने पुत्र महेन्द्र और बेटी संघमित्रा को अपने संदेश के प्रचार के लिए श्रीलंका भेजा। अशोक ने बौद्ध धर्म के सिद्धान्तों में एकरूपता लाने के लिए पाटलिपुत्र में एक बड़ी सभा की जिसे तीसरी बौद्ध सभा भी कहते हैं। इसके अतिरिक्त अशोक ने बौद्ध स्तूपों (धार्मिक स्मारक) एवं बौद्ध विहारों (भिक्षुओं के रहने का स्थान) का निर्माण कराया। साँची स्तूप के निर्माण की शुरुआत उसी ने कराई थी। पीठ से पीठ सटाकर बैठे हुए चार सिंह हमारा राजचिह्न है इसे अशोक के सारनाथ स्तम्भ से लिया गया है। विश्व के इतिहास में अशोक के समान उदार व मानवतावादी सम्राट आज तक नहीं हुआ है।

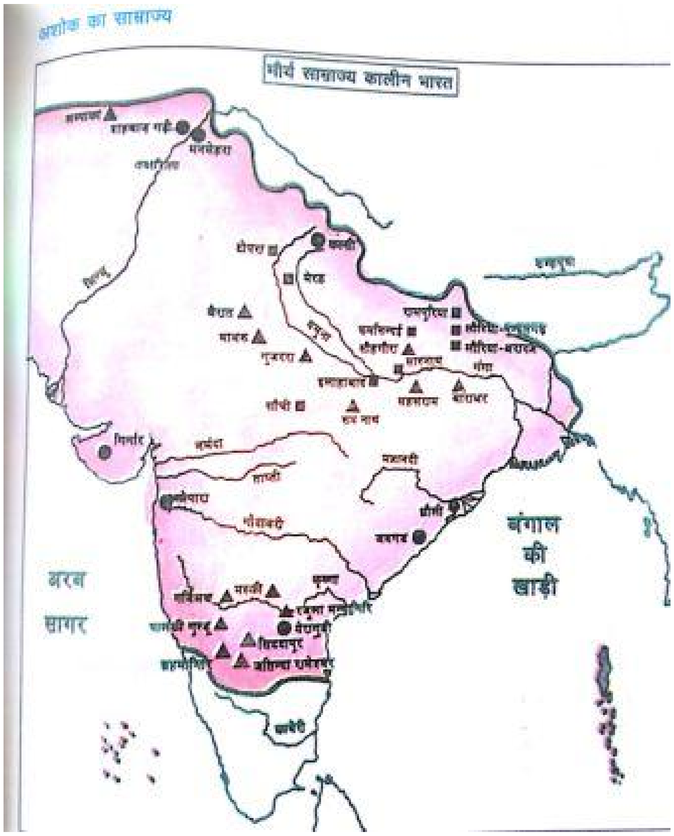

मौर्य साम्राज्य का पतन

वंशानुगत साम्राज्य तभी तक बने रहते हैं जब तक योग्य शासकों की कड़ी बनी रहती है। अशोक के दुर्बल उत्तराधिकारियों के कारण दूरस्थ प्रान्त स्वतंत्र होने लगे। देश में विदेशी आक्रमण होने लगे।

धीरे-धीरे साम्राज्य की शक्ति कमजोर होती गई। पुष्यमित्र शुंग जो मौर्य साम्राज्य में सेनापति था, ने मौर्य साम्राज्य पर कब्जा कर लिया। इस प्रकार मौर्य साम्राज्य का पतन हो गया।

संगम साहित्य

मौर्य साम्राज्य के समकालीन सुदूर दक्षिण में तीन राज्य चोल (कारोमण्डल तट), चेर (केरल) एवं पांड्य (दक्षिण छोर) थे। इन राज्यों के इतिहास की जानकारी तमिल भाषा के प्राचीनतम साहित्य ”संगम साहित्य“ में मिलती है, जो प्रथम शताब्दी में लिखा गया था। इससे इन राज्यों के जीवन एवं युद्धों का पता चलता है।

मौर्य वंश कितने वर्ष

चन्द्र गुप्त मौर्य
(322 से 298 ई0पू0)(........ वर्ष)

बिन्दुसार
(298 से 273 ई0पू0)(........ वर्ष)

अशोक
(273 से 236 ई0पू0)(........ वर्ष)

वृहद्रथ
(अन्तिम शासक)

***अभ्यास**

1. शुंगवंश का संस्थापक कौन था?

2. कण्व वंश के अन्तिम शासक का नाम बताइए।

3. सिमुक किस वंश का शासक था?

4. सातवाहन कालीन धर्म की क्या विशेषता थी?

5. भारत के विदेशों से सम्पर्क के कारण व्यापार, पहनावा, ज्ञान विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी में क्या बदलाव आया ?

6. कुषाण कालीन कला की विशेषता का उल्लेख करिए।

7. विदेशियों ने भारत से क्या सीखा? लिखिए।

8. भारतीय संस्कृति की ऐसी क्या विशेषताएं हैं, जिससे कि वह अन्य प्राचीन सभ्यताओं से भिन्न है?

9. सही कथन के सामने (झ्) तथा गलत कथन पर (´) का निशान लगाइए -

अ. कार्ले का चैत्य मण्डप कुषाणों ने बनवाया।

ब. मिनाण्डर शक शासक था।

स. भारत में सोने के सिक्के सबसे पहले कुषाण राजा ने चलाए ।

द. मथुरा एवं गान्धार कुषाण काल की कला के प्रमुख केन्द्र थे।

10 रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए।

अ. सातवाहन वंश के शासक .... धर्म के अनुयायी थे।

ब. कनिष्क ने ....संवत् चलाया।

स. कण्व वंश के संस्थापक ....थे।

द. शक शासकों में ....सबसे अधिक विख्यात शासक था।

प्रोजेक्ट वर्क

गान्धार शैली एवं मथुरा शैली के किन्हीं दो-दो मूर्तियों के चित्र अपनी पुस्तिका में चिपकाएँ और विशेषताआंे का उल्लेख कीजिए।